ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 168-171**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षणिक आकांक्षा पर उनके पारिवारिक वातावरण का प्रभाव (मीरजापुर जनपद के चुनार तहसील में स्थित स्वावित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर आधारित एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण)

सतीश चन्द्र वर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर– समाजशास्त्र विभाग, के0बी0पी0जी0 कॉलेज, मीरजापुर (उ0प्र0) भारत

Received-18.05.2026, Revised-26.05.2026, Accepted-04.06.2026, **E-mail:satish1984verma@gmail.com**

सारांशः ***प्रस्तुत अध्ययन मीरजापुर जनपद के उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षणिक आकांक्षा पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण है। इस अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है। समग्र के रूप में मीरजापुर जनपद के चुनार तहसील क्षेत्र में स्थित स्वावित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को शामिल किया गया है। चुनार तहसील में स्थित सभी स्वावित्तपोषित महाविद्यालयों में से तीन महाविद्यालयों का चयन उद्देश्य परक विधि से किया गया। समग्र में से प्रतिदर्श के रूप में कुल 150 विद्यार्थियों का चयन सरल यादृच्छिक विधि से किया गया है। यादृच्छिक विधि से प्राप्त प्रतिदर्श पर आधारित ये अनुसंधान विद्यार्थियों की शैक्षणिक आकांक्षा और उनके पारिवारिक वातावरण के बीच सम्बंधों के प्रभाव को प्रदर्शित करती हैं। पारिवारिक वातावरण विद्यार्थियों के शैक्षणिक आकांक्षा को प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रतिशत एवं सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्याय के विश्लेषण के परिणाम स्वरूप ये निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर उनके पारिवारिक वातावरण का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।***

कुंजीभूत शब्द– शैक्षणिक आकांक्षा, पारिवारिक वातावरण, स्वावित्तपोषित, सभ्यता का निर्धारण, शिक्षा व्यवस्था, जन्म मूलक परिवार।

प्रस्तावना– किसी भी समाज में सभ्यता का निर्धारण उस समाज की शैक्षणिक व्यवस्था से ही होता है। यानि एक सभ्य समाज का निर्माण व्यवस्थित शिक्षा व्यवस्था से ही संभव हो पाता है। शिक्षा ही वह साधन है जिसके आधार पर ज्ञान के साथ–साथ सामाजिक गतिशीलता को भी आधार मिलता है। शिक्षा का उच्च चरण उच्च शिक्षा प्रक्रिया की वह स्थिति है, जहाँ पर मानव अपनी पहचान अलग–अलग क्षेत्रों में अपनी महत्वाकांक्षा के हिसाब से प्राप्त करता है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अगर देखा जाए, तो शिक्षा केवल व्यक्तिगत उपलब्धि का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह सामाजिक स्तरीकरण के परिणाम के साथ–साथ उसका महत्वपूर्ण साधन भी हैं।

परिवार की सामाजिक–आर्थिक स्थिति, माता–पिता की शिक्षा, घर का अनुशासन तथा माता पिता के मध्य व्याप्त सम्बंधों से मिलकर बनने वाला प्रवेश पारिवारिक वातावरण का निर्माण करता है। पारिवारिक वातावरण का विद्यार्थियों के शैक्षणिक आकांक्षा पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही है, क्योंकि आकांक्षाएं किसी विद्यार्थी में शून्य से जन्म नहीं लेती है बल्कि इसकी शुरुआत उसके जन्म मूलक परिवार (जन्म मूलक परिवार वह परिवार होता है, जिसमें एक व्यक्ति स्वयं जन्म लेता है) से होती है। विद्यार्थी का जन्म मूलक परिवार ही वह प्रथम अध्ययन केंद्र होता है, जहाँ से बालक को पहली बार ये सीख प्राप्त होती है कि वह किस कार्य को आसानी से सफल बना सकता है। यानी की पारिवारिक वातावरण ही उसके आगे के कार्यों को निर्धारित एवं पूरा करने के लिए प्रेरित करता है।

ऑगस्ट कॉम्ट ने पारिवारिक वातावरण के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि "समाज के अध्ययन की वास्तविक इकाई परिवार है न कि व्यक्ति"।

सी0 एच0 कूल "परिवार को एक ऐसा प्राथमिक समूह माना है जो मानव स्वभाव की पोषिका के रूप में काम करता है"।

बोर्दियो का तर्क है कि "उच्च स्तर वाले परिवारों में बच्चों को केवल विरासत में संपत्ति ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पूंजी भी प्राप्त होती है। जिसमें भाषा की जानकारी, शिष्टाचार, कला की समझ और शिक्षा का एक विशिष्ट दृष्टिकोण शामिल होता है। उच्च शिक्षा में यही सांस्कृतिक पूंजी विद्यार्थियों के अंदर आत्मविश्वास को जन्म देती है।

बर्नस्टीन के अनुसार, उच्च और मध्यम स्तर के परिवारों में विस्तृत कोड (Elaborated Code) का उपयोग होता है, जो अमूर्त विचार और उच्च शिक्षा के अनुकूल होता है। इसके विपरीत, निम्न स्तर के (श्रमिक वर्ग) परिवारों में सीमित कोड (Restricted Code) का प्रभाव विद्यार्थी की शैक्षणिक महत्वाकांक्षा को सीमित कर सकता है।

मैक्स वेबर का ये मानना है कि मानव की आकांक्षाएं उसके जीवन अवसरों पर निर्भर करती हैं, और ये जीवन अवसरों उसकी राजनीतिक स्थिति, आर्थिक स्थिति और सामाजिक प्रतिष्ठा से निर्धारित होते हैं।

जेम्स कोलमैन ने सामाजिक पूंजी के महत्व को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि परिवार के सदस्यों के बीच उचित संवाद और स्वस्थ संबंध बच्चों की उपलब्धियों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं।

प्रमुख शब्दों की व्याख्या–

विद्यार्थीः प्रस्तुत शोध कार्य में विद्यार्थी से आशय स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षा में अध्ययन करने वाले छात्र–छात्राओं से है।

उच्च शिक्षाः प्रस्तुत शोध कार्य में उच्च शिक्षा से आशय स्नातक (बी.ए, बी.एस.सी. एवं बी.कॉम) एवं स्नातकोत्तर (एम.ए.,एम. एस.सी. एवं एम. कॉम) कक्षा की शिक्षा से है।

शैक्षणिक आकांक्षाः उच्च शिक्षा, प्रतिष्ठित रोजगार एवं सामाजिक उन्नति जैसे लक्ष्यों की प्राप्त करने की इच्छा ही शैक्षणिक आकांक्षा कहलाती है।

पारिवारिक वातावरणः पारिवारिक वातावरण से यहां मतलब विद्यार्थी के परिवार के शैक्षणिक एवं आर्थिक आयाम से है। विद्यार्थी को अपने विभिन्न प्रकार के लक्ष्यों को पूरा करने हेतु परिवार से कुछ अपेक्षाएं होती हैं। जिसे पारिवारिक वातावरण से ही सम्भव किया जा सकता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व– किसी भी आदर्श राष्ट्र का निर्माण उसके सभ्य एवं जिम्मेदार नागरिकों से होता है। जब नागरिकों को सही दिशा प्राप्त हो, तो एक आदर्श राष्ट्र और आदर्श समाज का निर्माण आसान हो जाता है। इस परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता निर्विवाद है।

परिवार ही वह प्रथम पाठशाला है जहाँ समाजीकरण की प्रक्रिया से एक बालक जैविक मानव से सामाजिक मानव के रूप में परिवर्तित होता है। जिस कारण से परिवार के वातावरण को समझना बहुत जरूरी हो जाता है। पारिवारिक वातावरण ही वह आधार है,

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

जो विद्यार्थियों की शैक्षणिक आकांक्षाओं को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। अतः परिवार के बहुआयामी स्वरूप और उसकी कार्यप्रणाली का सूक्ष्म अध्ययन करना अनिवार्य हो जाता है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि पारिवारिक वातावरण एवं विद्यार्थी के अंतरसम्बंधों को समझने से एक ठोस समाजशास्त्रीय आधार प्राप्त होगा। इस अध्ययन के माध्यम से निम्नलिखित लाभ सुनिश्चित किए जा सकते हैं।

- विद्यार्थी की सोच में व्याप्त कमियों को दूर किया जा सकेगा।
- सरकार द्वारा चलाये जाने वाले विभिन्न कल्याणकारी कार्यक्रमों की उपयोगिता को बेहतर ढंग से समझा जा सकेगा।
- सामाजिक संरचना की बेहतर समझ के आधार पर प्रशासन को नीति निर्माण एवं क्रियान्वयन में सहयोग प्राप्त हो सकेगा।
- व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के मध्य व्याप्त अंतरसम्बंधों और उनके ताने–बाने को स्पष्टता रूप से समझा जा सकेगा।

अंततः यह अध्ययन न केवल समाजशास्त्रीय समझ को मजबूत करेगा, बल्कि एक सशक्त राष्ट्र निर्माण की दिशा में मार्ग प्रशस्त करेगा।

शोध के उद्देश्य–

1. परिवार की उच्च आर्थिक स्थिति और शैक्षणिक आकांक्षा के बीच संबंध का विश्लेषण करना।
2. माता–पिता के शैक्षिक स्तर का विद्यार्थी के शैक्षणिक आकांक्षा पर प्रभाव को देखना।

शोध परिकल्पना–

1. परिवार की उच्च आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों में उच्च शैक्षणिक आकांक्षाओं को जन्म देती है।
2. शिक्षित माता–पिता अपने बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए अधिक प्रोत्साहित करते हैं।

शोध पद्धति– प्रस्तुत शोध कार्य "उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षणिक आकांक्षा पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभाव" की जांच प्राथमिक एवं द्वितीय दोनों प्रकार के स्रोतों पर आधारित है जिसमें से प्राथमिक स्रोत के रूप में मीरजापुर जनपद के चुनार तहसील के स्वावित्तपोषित महाविद्यालयों में से तीन महाविद्यालयों (राम ललित सिंह महाविद्यालय ,राम सुरेश सिंह महाविद्यालय एवं राजदीप पीजी महाविद्यालय) में अध्ययनरत विद्यार्थियों को शामिल किया गया है। प्राथमिक तथ्य के संकलन हेतु समग्र (6936) विद्यार्थियों में से 150 विद्यार्थियों का सरल यादृच्छिक पद्धति द्वारा चयन कर साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग कर तथ्यों का संकलन किया गया। द्वितीय स्रोत के रूप में सरकारी पत्र, पत्रिका, गजट, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध पत्र, किताब तथा जनगणना आदि में उपलब्ध आंकड़ों उपयोग का किया गया। दोनों प्रकार के स्रोतों का प्रयोग करके समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। शोध गुणात्मक और मात्रात्मक विधियों का मिश्रण है।

आंकड़ों का विश्लेषण– उत्तरदाताओं के परिवार की आर्थिक स्थिति का विवरण और उनके शैक्षणिक आकांक्षा पर प्रभावों का प्रस्तुतीकरण निम्नानुसार है।

तालिका संख्या –1

परिवार की मासिक आय	उत्तरदाताओं की कुल संख्या 150	उत्तरदाताओं का कुल प्रतिशत 100	उच्च आकांक्षा स्तर		मध्य आकांक्षा स्तर		निम्न आकांक्षा स्तर		औसत आकांक्षा स्कोर
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
50 हजार से अधिक	48	32	42	87.5	5	10.41	2	2.08	9.2
50 से 30 हजार	55	36.7	27	49.09	20	36.36	8	14.54	7.1
30 हजार से कम	47	31.3	7	14.89	13	27.65	27	57.44	5.4

उपरोक्त तालिका में उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ों का विवरण दिया गया है। इन आंकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि 150 उत्तरदाताओं में से (48) 32 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं, जिनके परिवार की मासिक आय 50,000 रुपये से अधिक है। इन 48 उत्तरदाताओं में से कुल (42) 87.5 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा है, जिनकी शैक्षणिक आकांक्षा उच्च, (5) 10.41प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा है, जिनकी शैक्षणिक आकांक्षा मध्य (2) 2.08 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा है, जिनकी शैक्षणिक आकांक्षा निम्न है। (55) 36.7 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं, जिनके परिवार की मासिक आय 50,000 से 30000 रुपये के मध्य है। इन 55 उत्तरदाताओं में से कुल (27) 49.09 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा है, जिनकी शैक्षणिक आकांक्षा उच्च, (20) 36.36 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा है, जिनकी शैक्षणिक आकांक्षा मध्य (8) 14.54 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा है, जिनकी शैक्षणिक आकांक्षा निम्न है। (47) 31.3 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं, जिनके परिवार की मासिक आय 30,000 रुपये से कम है। इन 47 उत्तरदाताओं में से कुल (7) 14.89 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा है, जिनकी शैक्षणिक आकांक्षा उच्च, (13) 27.56 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा है, जिनकी शैक्षणिक आकांक्षा मध्य (27) 57.44 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा है, जिनकी शैक्षणिक आकांक्षा निम्न है।

अध्ययन के परिणाम स्वरूप ये निष्कर्ष प्राप्त होता हैं कि उच्च आय वाले परिवारों से सम्बंधित कुल 48 उत्तरदाताओं में से (42) 87.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं की शैक्षणिक आकांक्षाएं उच्च हैं। जबकि निम्न आय वाले परिवारों से सम्बंधित कुल 47 उत्तरदाताओं में से (7) 14.89 प्रतिशत उत्तरदाताओं की शैक्षणिक आकांक्षाएं उच्च हैं। औसत स्कोर भी 9.2 से घटकर 5.4 पर आ जाता है। अतः अंत में यही कहा जा सकता है कि परिवार की उच्च आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों की शैक्षणिक आकांक्षा पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। उत्तरदाताओं के माता–पिता के शिक्षा स्तर का विवरण और उनके शैक्षणिक आकांक्षा पर प्रभावों का प्रस्तुतीकरण निम्नानुसार हैः

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

तालिका संख्या –2

माता–पिता के शिक्षा का स्तर	उत्तरदाताओं की कुल संख्या 150	उत्तरदाताओं का कुल प्रतिशत 100	उच्च आकांक्षा स्तर		मध्य आकांक्षा स्तर		निम्न आकांक्षा स्तर		औसत आकांक्षा स्कोर
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
उच्च शिक्षा	45	30:	39	86.66	4	8.8	2	4.4	9.5
माध्यमिकशिक्षा	70	46.66	43	61.42	20	28.57	7	10	7.8
प्राथमिकशिक्षा एवं अशिक्षित	35	23.23	5	14.28	7	20	23	65.71	4.2

उपरोक्त तालिका में उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ों का विवरण दिया गया है। इन आंकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि 150 उत्तरदाताओं में से (45) 30 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं, जिनके माता–पिता के शिक्षा का स्तर उच्च (स्नातक या स्नातकोत्तर) है। इन 45 उत्तरदाताओं में से कुल (39) 86.66 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा है, जिनकी शैक्षणिक आकांक्षा उच्च, (4) 8.8 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा है, जिनकी शैक्षणिक आकांक्षा मध्य (2) 4.4 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा है, जिनकी शैक्षणिक आकांक्षा निम्न है। (70) 46.66 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं, जिनके माता–पिता के शिक्षा का स्तर मध्य (इंटरमीडिएट या हाईस्कूल) है। इन 70 उत्तरदाताओं में से कुल (43) 61.42 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा है, जिनकी शैक्षणिक आकांक्षा उच्च, (20) 28.57 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा है, जिनकी शैक्षणिक आकांक्षा मध्य, (7) 10 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा है, जिनकी शैक्षणिक निम्न है। (35) 23.23 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं, जिनके माता–पिता के शिक्षा का स्तर निम्न (प्राथमिक या अशिक्षित) है। इन 35 उत्तरदाताओं में से कुल (5) 14.28 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा है, जिनकी शैक्षणिक आकांक्षा उच्च, (7) 20 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा है, जिनकी शैक्षणिक आकांक्षा मध्य (23) 65.71 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा है, जिनकी शैक्षणिक निम्न है।

अध्ययन का निष्कर्ष ये है कि उच्च शिक्षित माता–पिता से सम्बंधित कुल 45 उत्तरदाताओं में से (39) 86.66 प्रतिशत उत्तरदाताओं की शैक्षणिक आकांक्षा का स्तर उच्च पाया गया। निम्न शिक्षित माता पिता से सम्बन्धित कुल 35 उत्तरदाताओं में से (5) 14.28 प्रतिशत ही उत्तरदाताओं की शैक्षणिक आकांक्षा उच्च दिखायी देती है। औसत स्कोर भी 9.5 से घटकर 4.2 पर आ जाता है। अतः अंत में यही कहा जा सकता है कि परिवार के उच्च शैक्षणिक आयाम का उत्तरदाताओं के शैक्षणिक आकांक्षा पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष– प्रस्तुत शोध का निष्कर्ष यह है कि विद्यार्थी की उच्च शिक्षा और उसकी शैक्षणिक आकांक्षा ना केवल उसकी व्यक्तिगत बुद्धिमत्ता का परिणाम है। बल्कि इस के विपरीत, यह एक 'पारिवारिक परियोजना' है। भारत जैसे विविधतापूर्ण समाज में, परिवार एक ऐसी धुरी है जो न केवल सामाजिक सुरक्षा प्रदान करती है, बल्कि विद्यार्थी की आकांक्षाओं के निर्माण और उन्हें प्राप्त करने के केंद्र के रूप में भी कार्य करती है।

अध्ययन में ये देखा गया कि यदि माता–पिता शिक्षित हैं, तो वे घर में एक ऐसा वातावरण निर्मित करते हैं जहाँ शिक्षा को प्राथमिकता दी जाती है। शोध दर्शाता है कि सीमित आय होने पर भी, शिक्षित माता–पिता अपने बच्चों में ऊँची आकांक्षाएं पैदा करने में सक्षम होते हैं। उच्च आय वाले परिवार बच्चों को बेहतर संसाधन, कोचिंग और तकनीक उपलब्ध कराते हैं। यहाँ तक कि कम शिक्षित माता–पिता भी यदि आर्थिक रूप से समृद्ध हैं, तो वे संसाधनों के बल पर बच्चों के लक्ष्यों को ऊँचा रखने में सहायक होते हैं। परिवार का नेटवर्क और सामाजिक संबंध विद्यार्थी को सही समय पर सही मार्गदर्शन और अवसर दिलाने में मदद करते हैं।

सुझाव–

1. विद्यार्थियों की आकांक्षाओं के वास्तविक स्वरूप को धरातल पर उतारने के लिए केवल शैक्षणिक सुधार पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि समग्र पारिवारिक सशक्तिकरण आवश्यक है।
2. भारत जैसे देश में सरकार और शिक्षण संस्थानों को केवल विद्यार्थियों के लिए ही नहीं, बल्कि अभिभावकों के लिए भी नियमित कार्यशालाएं आयोजित की जानी चाहिए। जिसका उद्देश्य उन्हें आधुनिक करियर विकल्पों, छात्रवृत्तियों और उच्च शिक्षा की महत्ता से अवगत कराना होना चाहिए।
3. उच्च शिक्षा संस्थानों में अक्सर पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों को सांस्कृतिक अलगाव का सामना करना पड़ता है। इसे दूर करने के लिए समावेशी वातावरण का निर्माण किया जाना चाहिए।
4. अनुभवी शिक्षकों और पूर्व छात्रों के माध्यम से विशेष मेंबरशिप प्रदान की जानी चाहिए ताकि विद्यार्थी अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि की बाधाओं को पार कर सकें।
5. जब तक परिवार आर्थिक असुरक्षा (जैसे गरीबी या ऋण का डर) से मुक्त नहीं होगा, तब तक विद्यार्थी निर्भय होकर आसमान छूने की आकांक्षा नहीं रख सकता। सरकार की शिक्षा ऋण प्रक्रियाओं को सरल बनाया जाय और ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक जागरूकता जैसे अभियान चलाने की ज़रूरत है।

अंततः, उच्च शिक्षा की जाने वाले राह में आने वाली बाधाएं केवल महाविद्यालयों की चारदीवारी के भीतर हल नहीं कि जा सकती। इसके लिए परिवार के वातावरण को आकांक्षा निर्माण केंद्र के रूप में विकसित करना होगा। परिवार को

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

आर्थिक रूप से सुरक्षित, शैक्षणिक रूप से जागरूक और भावनात्मक रूप से सुदृढ़ बनाना होगा, तभी हमारे देश का हर एक बच्चा अपनी वास्तविक क्षमता को पहचान पाएगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Bourdieu, P. (1986), The forms of capital. In J. G. Richardson (Ed). Handbook of theory and research for the sociology of education, New York, Greenwood, (PP. 241-258).
2. Coleman, J. S. (1988), Social capital in the creation of human capital. American Jouranl of Sociology, 94, S95-S120.https;//doi.org/10.1086/228943.
3. राव, एम. एस. ए. (1990), शिक्षा का समाजशास्त्र. नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
4. गृह मंत्रालय, (2011), भारत की जनगणना 2011. नई दिल्ली, भारत सरकार।
5. शिक्षा मंत्रालय, (2023), अखिल भारतीय उच्च शिक्षा सर्वेक्षण, 2021–22 रिपोर्ट, नई दिल्ली, उच्च शिक्षा विभाग।
6. Googe, W. J., (1964), The family. Englewood Cliffs.NJ; Prentice-Hall.
7. सिंह, वाई. (1994), भारतीय परंपरा का आधुनिकीकरण, जयपुर, रावत पब्लिकेशन्स।
8. Halsey A. H., Lauder, H., Brown, P., Wells, A. S. (Eds.),(1997), Education; Cclture, Economy and society, Oxford, UK; Oxford University Press.
9. NCRT, (2023), Report on higher education trends in india, New Deihi; National Council of Educational Research and Trainiing.
10. जायाराम, एन. (1990), शिक्षा का समाजशास्त्र, जयपुर, रावत पब्लिकेशन्स।

*****